अंधी दृष्टि भी कोई चीज़ होती है

हाल ही में एक ऐसे व्यक्ति का मामला प्रकाशित हुआ है जिसके दिमाग के वे हिस्से पूरी तरह नष्ट हो चुके हैं जो दृष्टि से सम्बंधित हैं मगर फिर भी वह रास्ते में आने वाले अवरोधों से बचकर निकल जाता है। वास्तव में इस स्थिति को अंध-दृष्टि या ब्लाइंड साइट कहते हैं। इसमें व्यक्ति की आंखें एकदम दुरुस्त रहती हैं मगर दृष्टि सम्बंधी कॉर्टेक्स नष्ट हो चुका होता है।

स्ट्रोक वगैरह के दौरान दृष्टि कॉर्टेक्स क्षतिग्रस्त या नष्ट हो सकता है। मगर आम तौर पर यह क्षति दिमाग के किसी एक गोलार्ध में होती है। ऐसे व्यक्ति एक आंख से मिलने वाले संकेतों को देख सकते हैं जबकि दूसरी आंख के संकेतों को ग्रहण करने की क्षमता खो बैठते हैं। पूर्व में ऐसे व्यक्तियों के साथ किए गए प्रयोगों में पता चला था कि जब उनकी अंध दृष्टि की ओर चीज़ें दिखाई जाती हैं तो वे कई बार उस चीज़ के रंग या आकृति वगैरह का अंदाज़ लगा लेते हैं। ऐसा माना जाता था कि उस आंख (जिससे सम्बंधित कॉर्टेक्स नष्ट हो चुका है) से जो संकेत उत्पन्न होते हैं वे दिमाग के किसी ऐसे हिस्से में पहुंचते हैं जिसके बारे में हमें अभी पता नहीं है।

मगर ताज़ा मामला तो एकदम अनूठा है। इस व्यक्ति (जिसे शोधकर्ता टी.एन. कहते हैं) के दिमाग के दोनों गोलार्धों का दृष्टि कॉर्टेक्स नष्ट हो चुका है। अलबत्ता, उसकी आंखें सही सलामत हैं। टी.एन. स्वयं एक डॉक्टर है और वह अपनी स्थिति के चिकित्सकीय महत्व को जानता है और शोध कार्य में भरपूर सहयोग देने को तत्पर है।

प्रयोग तो कई किए गए मगर एक प्रयोग खासा रोचक रहा। नीदरलैण्ड के टिलबर्ग विश्वविद्यालय की बीट्रिस डी गेल्डर और जेनेवा विश्वविद्यालय के एलन पेग्ना ने ध्यान दिया था कि टी.एन. चलते समय छड़ी का उपयोग तो करता है मगर रास्ते में कोई अवरोध हो तो साफ बचकर निकल जाता है। इसे देखते हुए उन्होंने टी.एन. को प्रयोगशाला के एक कमरे में चलने को कहा जबकि वहां तमाम छोटी-बड़ी चीज़ें बिखरी हुई थीं। थोड़ा हिचकते हुए टी.एन. तैयार हो गया। मगर जब उसने वह कमरा पार किया तो काफी नफासत से चीज़ों से बचते हुए किया। वह एक भी चीज़ से नहीं टकराया हालांकि चेतन रूप में वह उन्हें देख नहीं सकता।

इससे पहले किए गए प्रयोगों में पता चला था कि टी.एन. किसी तस्वीर को देखकर बता सकता था कि उसके चेहरे के भाव खुशी के हैं या मायूसी के। वैज्ञानिकों को लगता है कि इसका कारण यह हो सकता है कि आंखों से मिलने संकेत उसके दिमाग के किसी ऐसे हिस्से में पहुंचते हैं जहां उन्हें प्रोसेस किया जाता है हालांकि व्यक्ति इसके प्रति सचेत नहीं होता।

वैसे यह भी देखा गया है कि कुछ दृष्टिहीन लोग आवाज़ों का उपयोग रास्ते के अवरोधों का पता करने में करते हैं। मगर टी.एन. जिन छोटी-छोटी वस्तुओं से किनारा करके निकला, वहां यह तरीका कारगर नहीं हो सकता था। यदि टी.एन. आवाज़ों का उपयोग नहीं कर रहा है, तो ज़ाहिर है कि दिमाग के कामकाज का कुछ हिस्सा ऐसा है जिसके बारे में हम पूरी तरह अंधकार में हैं। शोधकर्ता इस खोजबीन को आगे बढ़ाने जा रहे हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 52 का हल

चं	द्र	या	न		प		स्व	र
	व्य		म	ग	र	म	च्छ	
प्रा	मा	णि	क		का			उ
	न			म	र	णा	स	न्न
आ				ट				त
का	र्ल	पॉ	प	र			हि	
र			त		म	ल	म	ल
	रो	ग	वा	ह	क		न	
व्यो	म		र		र		द	